।। श्रीहरिः ।।

नित्य-स्तुतिः

स्वामी रामसुखदास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीहरिः

नित्यस्तुतिः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीहरिः ॥

नित्यस्तुतिः

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥
(गीता २ । ७)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो गजके मुखवाले हैं, भूतगण आदिके द्वारा सेवित हैं, कैथ और जामुनके फलोंका बड़े सुन्दर ढंगसे भक्षण करनेवाले हैं, शोकका विनाश करनेवाले हैं और भगवती उमाके पुत्र हैं, उन विघ्नेश्वर गणेशजीके चरणकमलोंमें मैं प्रणाम करता हूँ।

कायरताके दोषसे उपहत स्वभाववाला और धर्मके विषयमें मोहित अन्तःकरणवाला मैं आपसे पूछता हूँ कि जो निश्चित श्रेय हो वह मेरे लिये कहिये। मैं आपका शिष्य हूँ। आपके शरण हुए मेरेको शिक्षा दीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥
(८ । ९)

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान् ।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो सर्वज्ञ, पुराण, शासन करनेवाला, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म, सबका धारण-पोषण करनेवाला, अज्ञानसे अत्यन्त परे, सूर्यकी तरह प्रकाशस्वरूप—ऐसे अचिन्त्य स्वरूप का चिन्तन करता है।

हे देव! मैं आपके शरीर में सम्पूर्ण देवताओंको, प्राणीयों के विशेष-विशेष समुदायोंको, कमलासनपर बैठे हुए ब्रह्माजी को, शंकरजीको, सम्पूर्ण ऋषियोंको और सम्पर्ण दिव्य सर्पोंको देख रहा हूँ।

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् ।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे विश्वरूप! आपको मैं अनेक हाथों, पेटों, मुखों और नेत्रोंवाला तथा सब ओरसे अनन्त रूपोंवाला देख रहा हूँ। मैं आपके न आदिको, न मध्यको और न अन्तको ही देख रहा हूँ।

मैं आपको किरीट, गदा, चक्र (तथा शंख और पद्म) धारण किये हुए देख रहा हूँ। आपको तेजकी राशि, सब ओर प्रकाश करनेवाले, देदीप्यमान अग्नि तथा सूर्यके समान कांतिवाले, नेत्रोंके द्वारा कठिनतासे देखे जाने योग्य और सब तरफसे अप्रमेयस्वरूप देख रहा हूँ।

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप ही जानने योग्य परम अक्षर (अक्षरब्रह्म) हैं, आप ही इस सम्पूर्ण विश्वके परम आश्रय हैं, आप ही सनातन धर्मके रक्षक हैं, और आप ही अविनाशी सनातन पुरुष हैं—ऐसा मैं मानता हूँ।

आपको मैं आदि, मध्य और अंतसे रहित, अनंत प्रभावशाली, अनंत भुजाओंवाले, चंद्र और सूर्यरूप नेत्रोंवाले, प्रज्वलित अग्निके समान मुखोंवाले और अपने तेजसे संसारको संतप्त करते हुए देख रहा हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥

अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे महात्मन्! यह स्वर्ग और पृथ्वीके बीचका अंतराल और संपूर्ण दिशाएँ एक आपसे ही परिपूर्ण हैं। आपके इस अद्‌भुत और उग्ररूपको देखकर तीनों लोक व्यथित (व्याकुल) हो रहे हैं।

वे ही देवताओंके समुदाय आपमें प्रविष्ट हो रहे हैं। उनमेंसे कई तो भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए आपके नामों और गुणोंका कीर्तन कर रहे हैं। महर्षियों और सिद्धोंके समुदाय 'कल्याण हो! मंगल हो! ऐसा कहकर उत्तम-उत्तम स्त्रोतोंके द्वारा आपकी स्तुति कर रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥
(११ । १५–२२)

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, आठ वसु, बारह साध्यगण, दस विश्वेदेव और दो अश्विनीकुमार, उनचास मरुद्गण, सात पितृगण तथा गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्धोंके समुदाय हैं, वे सभी चकित होकर आपको देख रहे हैं।

हे अन्तर्यामी भगवन्! आपके नाम, गुण, लीलाका कीर्तन करनेसे यह सम्पूर्ण जगत् हर्षित हो रहा है और अनुराग (प्रेम)को प्राप्त हो रहा है। आपके नाम, गुण आदिके कीर्तनसे भयभीत होकर राक्षसलोग दसों दिशाओंमें भागते हुए जा रहे हैं और सम्पूर्ण सिद्धगण आपको नमस्कार कर रहे हैं। यह सब होना उचित ही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे महात्मन्! गुरुओंके भी गुरु और ब्रह्माके भी आदिकर्ता आपके लिये वे सिद्धगण नमस्कार क्यों नहीं करें? क्योंकि हे अनन्त! हे देवेश! हे जगन्निवास! आप अक्षर स्वरूप हैं; आप सत् भी हैं, असत् भी हैं और सत्-असत्से परे भी जो कुछ है, वह भी आप ही हैं।

आप ही आदिदेव और पुराणपुरुष हैं तथा आप ही इस संसारके आश्रय हैं। आप ही सबको जाननेवाले, जाननेयोग्य और परमधाम हैं। हे अनन्तरूप! आपसे ही सम्पूर्ण संसार व्याप्त है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप ही वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, दक्ष आदि प्रजापति और प्रपितामह (ब्रह्माजीके भी पिता) हैं। आपको हजारों बार नमस्कार हो! नमस्कार हो!! और फिर भी आपको बार-बार नमस्कार हो! नमस्कार हो!!

हे सर्व! आपको आगेसे नमस्कार हो! पीछेसे नमस्कार हो! सब ओरसे ही नमस्कार हो! हे अनन्तवीर्य! अमित विक्रमवाले आपने सबको समावृत कर रखा है; अतः सब कुछ आप ही हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी महिमा और स्वरूपको न जानते हुए 'मेरे सखा हैं ऐसा मानकर मैंने प्रमादासे अथवा प्रेमसे हठपूर्वक (बिना सोचे-समझे) हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखे ! इस प्रकार जो कुछ कहा है;

और हे अच्युत ! हँसी-दिल्लगीमें, चलते-फिरते, सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते समयमें अकेले अथवा उन सखाओं, कुटुम्बियों आदिके सामने मेरे द्वारा आपका जो कुछ तिरस्कार किया गया है, वह सब अप्रमेयस्वरूप आपसे मैं क्षमा करवाता हूँ।

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥
(११ । ३६–४४)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप ही इस चराचर संसारके पिता हैं, आप ही पूजनीय हैं और आप ही गुरुओंके महान् गुरु हैं। हे अनन्त प्रभावशाली भगवन्! इस त्रिलोकीमें आपके समान भी दूसरा कोई नहीं है. फिर अधिक तो हो ही कैसे सकता है!

इसलिये शरीरसे आपके चरणोंमें पड़कर स्तुति करनेयोग्य आप ईश्वरको मैं प्रणाम करके प्रसन्न करना चाहता हूँ। जैसे पिता पुत्रके, मित्रके और पति पत्नीके अपमानको सह लेता है, ऐसेही हे देव! आप मेरे द्वारा किया गया अपमान सहनेमें समर्थ हैं।

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

हे प्रभो! आप ही माता और आप ही पिता हैं, आप ही बन्धु और आप ही सखा हैं, आप ही विद्या और आप ही धन हैं; हे देवोंके देव! आप ही मेरे सर्वस्व हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

॥ श्रीहरिः ॥

प्रार्थना

हे नाथ ! आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे प्यारे लगें। केवल यही मेरी माँग है, और कोई माँग नहीं।

हे नाथ ! अगर मैं स्वर्ग चाहूँ तो मु नरकमें डाल दें, सुख चाहूँ तो अनंत दुःखों डाल दें, पर आप मुझे प्यारे लगें।

हे नाथ ! आपके बिना मैं रह न सक ऐसी व्याकुलता आप दे दें।

हे नाथ ! आप मेरे हृदयमें ऐसी आग लगा दें कि आपको प्रीतिके बिना मैं जी न सकूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे नाथ ! आपके बिना मेरा कौन है ? मैं किससे कहूँ और कौन सुनें ?

हे मेरे शरण्य ! मैं कहां जाऊँ ? क्या करूँ ? कोई मेरा नहीं ।

मैं भूला हुआ कइयोंको अपना मानता रहा । उनसे धोखा खाया, फिर भी धोखा खा सकता हूँ, आप बचायें !

हे मेरे प्यारे ! हे अनाथनाथ ! हे अशरणशरण ! हे पतितपावन ! हे दीनबन्धो ! हे अरक्षितरक्षक ! हे आर्त त्राण परायण ! हे निराधारके आधार ! हे अकारणकरुणावरुणालय ! हे साधनहीनके एकमात्र साधन ! हे असहायके सहायक ! क्या आप मेरेको जानते नहीं, मैं कैसा भगप्रतिज्ञ कैसा कृतघ्न कैसा अपराधी,

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

कैसा विपरीतगामी, कैसा अकरणकरण-परायण हूँ। अनंत दुःखोंके कारणस्वरूप भोगोंको भोगकर-जानकर भी आसक्त रहनेवाला, अहितको हितकर माननेवाला, बार-बार ठोकरें खाकर भी नहीं चेतनेवाला, आपसे विमुख होकर बार-बार दुःख पानेवाला, चेतकर भी न चेतनेवाला, जानकर भी न जाननेवाला मेरे सिवाय आपको ऐसा कौन मिलेगा ?

प्रभो ! त्राहि माम् ! त्राहि माम् !! पाहि माम् ! पाहि माम् !! हे प्रभो ! हे विभो ! मैं आँख पसारकर देखता हूँ तो मन-बुद्धि-प्राण-इन्द्रियां और शरीर भी मेरे नहीं हैं, फिर वस्तु-व्यक्ति आदि मेरे कैसे हो सकते हैं ! ऐसा मैं जानता हूँ.

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

कहता हूँ, पर वास्तविकतासे नहीं मानता। मेरी यह दशा क्या आपसे किंचिन्मात्र भी कभी छिपी है ? फिर हे प्यारे ! क्या कहूँ ! हे नाथ ! हे नाथ !! हे मेरे नाथ !!! हे दीनबन्धो ! हे प्रभो ! आप अपनी तरफसे शरणमें ले लें। बस, केवल आप प्यारे लगें।

भक्त-चरित्र पढ़कर, खूब अच्छा भाव बनाकर सुबह-शाम और मध्याह्न—तीनों समय भगवान्‌से यह प्रार्थना करनी चाहिये।

—परमश्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

सार बात

स्मृति (याद) दो प्रकारकी होती है- (१) क्रियात्मक, जैसे नाम-जप करना आदि, और (२) ज्ञानात्मक। क्रियात्मक स्मृति निरन्तर नहीं रहती, पर ज्ञानात्मक-स्मृति निरन्तर रहती है। जान लिया तो बस जान ही लिया। जाननेके बाद फिर विस्मृति, भूल नहीं होती। क्रियात्मक-स्मृतिमें जब क्रिया नहीं होती, तब भूल होती है। ज्ञानात्मक स्मृतिकी भूल दूसरे प्रकारकी है। जैसे एक व्यक्ति अपने-आपको ब्राह्मण मानता है। वह दिन भरमें एक बार भी याद नहीं करता कि मैं ब्राह्मण हूँ। काम न पड़े तो महीनेभर भी याद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं करता। परन्तु याद न करने पर भी भीतर 'मैं ब्राह्मण हूँ' यह ज्ञानात्मक याद निरन्तर रहती है। उससे कभी कोई पूछे तो वह अपनेको ब्राह्मण ही बतलायेगा। इस याद को भूल तभी मानी जाएगी, जब वह अपनेको गलतीसे वैश्य, क्षत्रिय या हरिजन मान ले। इसी तरह यदि संसारको रहने वाला, सच्चा मान लिया, तो यह भूल है। इसलिये यह अच्छी तरह मान लें कि संसार निरन्तर नाशमें जा रहा है। फिर चाहे यह बात याद रहे या नहीं। मानी हुई बातको याद नहीं करना पड़ता। मानी हुई बातकी ज्ञानात्मक स्मृति रहती है। बहनें-माताएं मानती हैं कि 'मैं स्त्री हूँ' तो इसे याद नहीं करना पड़ता। भाई लोग

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

मानते हैं कि 'मैं पुरुष हूँ' तो इसे याद नहीं करना पड़ता। ऐसे ही साधुको 'मैं साधु हूँ' ऐसे याद नहीं करना पड़ता, कोई माला नहीं फेरनी पड़ती। मान लिया तो बस मान ही लिया। विवाह होनेके बाद व्यक्तिको सोचना नहीं पड़ता कि विवाह हुआ या नहीं। इसी तरह आप आजही विशेषतासे विचार करलें कि संसार प्रतिक्षण जारहा है। यह अभी जिस रूपमें है, उस रूपमें यह सदा रह सकता ही नहीं।

दूसरी बात, जो संसार 'नहीं' है, वह 'है' के द्वारा ही दीख रहा है। जैसे, एक व्यक्ति बैठा है और उसके सामनेसे बीस-पचीस व्यक्ति चले गये। पूछनेपर वह कहता है कि बीस-पचीस आदमी यहाँसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर चले गये। यदि वह व्यक्ति भी उनके साथ चला जाता, तो कौन समाचार देता कि इतने व्यक्ति यहाँसे होकर गये हैं ? पर वह व्यक्ति गया नहीं, वहीं रहा है, तभी वह उन व्यक्तियोंके जानेकी बात कह सका है। रहे बिना गयेकी सूचना कौन देगा ? इसी प्रकार परमात्मा रहनेवाला है और संसार जाने वाला है। यदि आप यह बात मान लें कि संसार जा रहा है, तो आपकी स्थिति स्वाभाविक ही सदा रहनेवाले परमात्मामें होगी, करनी नहीं पड़ेगी। जहाँ संसारको रहनेवाला माना कि परमात्माको भूले। संसारको प्रतिक्षण जाता हुआ मान लेनेसे परमात्माकी याद न आनेपर भी आपकी स्थिति वस्तुतः परमात्मामें ही है।

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

संसार जा रहा है—यह बहुत श्रेष्ठ और मूल्यवान् बात है, सिद्धान्तकी बात है, वेदों और वेदान्त की बात है, महापुरुषोंकी बात है। परमात्मा रहनेवाले हैं और ससार जानेवाला है। वह परमात्मा 'है' रूपसे सर्वत्र परिपूर्ण है। सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि—ये युग बदलते है, पर परमात्मा कभी नहीं बदलते वे सदा ज्यों-के-त्यों रहते हैं। दो ही खास बातें हैं कि संसार नहीं है और परमात्मा हैं संसार जानेवाला है और परमात्मा रहनेवाले हैं; यदि आपने इन बातोंको मान लिया तो मानो बहुत बड़ा कार्य कर लिया, आपका जीवन सफल हो गया। फिर तत्त्वज्ञान भगवत्प्राप्ति, मुक्ति आदि सब इसीसे हो जायेगी।

'तात्विक प्रवचनसे'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

गीताप्रेस, गोरखपुरकी निजी दूकानें

फोन नं०		
३८६८९४	(१)	कलकत्ता—गोविन्द-भवन-कार्यालय
३८०२५१		१५१, महात्मा गाँधी रोड
२६९६७८	(२)	दिल्ली—गीताप्रेस, पुस्तक-दूकान,
		२६०९, नई सड़क
	(३)	पटना— ,, ,, अशोकराजपथ
५२३५१	(४)	कानपुर— ,, २४/५५, बिरहाना रोड
	(५)	हरिद्वार— ,, सब्जीमंडी, मोतीबाजार
६३०५०	(६)	वाराणसी—गीताप्रेस, कागज-एजेंसी,
		५९/९ नीचीबाग
१२२	(७)	स्वर्गाश्रम-गीताभवन, गङ्गापार
		स्टेशन ऋषिकेश (पौड़ी-गढ़वाल)
३०३०	(८)	गोरखपुर, गीताप्रेस

मूल्य: ८० पैसे

मुद्रक : राधा प्रेस, मेन रोड गाँधीनगर दिल्ली-३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri